SEERATE DATA ALI HAJWERI
(HINDI BAYAAN)

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

सीरते दाता अ़ली हजवेरी

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ! فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ اللّٰه   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ يَا حَبِيۡبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ يَا نُوۡرَ اللّٰه

نَوَيۡتُ سُنَّتَ الۡاِعۡتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाखि़ल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर सुब्ह़ो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा, उसे कि़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी ।

(مَجۡمَعُ الزَّوَائِد ج ۱۰، ص ۱۶۳، حدیث ۱۷۰۲۲، از ضیائے درود و سلام)

सब ने सफ़े मह़्शर में ललकार दिया हम को
ऐ बे कसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 192)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِيۡب!   صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ाति़र बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं **:**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "نِيَّةُ الۡمُؤۡمِنِ خَيۡرٌ مِّنۡ عَمَلِه" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (اَلۡمُعۡجَمُ الۡکَبِیۡر لِلطَّبَرَانِی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب، اُذْکُرُوااللّٰہَ، تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ ۞ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ وَالْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَۃً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज एक ऐसी अ़ज़ीम हस्ती की सीरते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे, जिन का फ़ैज़ान कई सदियां गुज़र जाने के बा वुजूद भी जारी व सारी है जिन के मज़ारे पुर अन्वार पर हर वक़्त लोगों का हुजूम रहता है, लोग ह़ाज़िर हो कर अपनी मुंह मांगी जाइज़ मुरादें पाते हैं । येह अहम शख़्सिय्यत कौन थीं ? इन का नाम व नसब, कुन्यत व लक़ब क्या था ? आज के बयान में येह सब सुनेंगे, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के साथ साथ इन का हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र करना और इन की पाकीज़ा आ़दातो सिफ़ात मसलन सब्रो शुक्र की मदनी सोच, इ़ल्मे दीन के हुसूल के शौक़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल और बयान के आख़िर में बैठने की सुन्नतें और आदाब भी बयान किये जाएंगे । اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

साबिरो शाकिर नौजवान

शाम का वक़्त था, रात की तारीकी आहिस्ता आहिस्ता हर शै को अपनी लपेट में ले रही थी, ख़ुरासान में एक बे साज़ो सामान मुसाफ़िर हाथ में अ़सा लिये, हर चीज़ से बे नियाज़, बोसीदा, मोटा और खुरदरा टाट का लिबास पहने चला जा रहा था, जब वोह आबादी के क़रीब पहुंचा तो रात गुज़ारने के इरादे से एक ऐसे मक़ाम पर ठहरा जहां ब ज़ाहिर दीनदार नज़र आने वाले कुछ अफ़राद भी मौजूद थे, जिन के चेहरे ख़ुश ह़ाली व बे फ़िक्री से दमक रहे थे, जैसे ही उन की नज़र इस मफ़्लूकुल ह़ाल (या'नी ख़स्ता ह़ाल) शख़्स पर पड़ी, तो उन में से एक ने सख़्त लहजे में सुवाल किया : "तुम कौन हो ?" उस मुसाफ़िर ने नर्मी से जवाब देते हुवे कहा : "मुसाफ़िर हूं, यहां रात बसर करने के लिये ठहरना चाहता हूं ।" वोह सब क़ह्क़हा लगा कर हंस पड़े और उसे ह़क़ारत से देखते हुवे कहा : "येह हम में से नहीं है ।" मुसाफ़िर उन की येह बात सुन कर ख़ुशी से खिल उठा और जवाब में कहा : "वाक़ेई मैं तुम में से नहीं हूं ।" रात हुई तो उन में से एक शख़्स ने उस के आगे सूखी रोटी ला कर रख दी और ख़ुद अपने दोस्तों की उस मह़फ़िल में शरीक हो

www.dawateislami.net

गया, जिस में वोह अन्वाओ़ अक़्साम की उ़म्दा और लज़ीज़ गिज़ाओं से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के साथ साथ एक दूसरे से हंसी मज़ाक़ में भी मश्गूल थे । वोह मुसाफ़िर को रूखी रोटी खाता देख कर हंसते और खाए हुवे ख़रबूज़े के छिलके उसे मारते जाते, सारी रात वोह लोग त़ा'नो तशनीअ़ के तीर बरसाते रहे या'नी बुरा भला कहते रहे, यहां तक कि सुब्ह़ हो गई मगर वोह साबिरो शाकिर नौजवान ख़ुश दिली से उन के सितम बरदाश्त करता रहा और कोई जवाबी कारवाई न की । (کشف المحجوب، ص٦٢، ملخصاً)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! इस अ़ज़ीम हस्ती की शान में, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की लिखी हुई मन्क़बत के कुछ अश्आ़र सुनते हैं ।

आप को ख़्वाजा पिया का वासित़ा दाता पिया हो मदीने का टिकट मुझ को अ़त़ा दाता पिया
मैं पुकारे जाऊंगा दाता पिया दाता पिया दो न दो मरज़ी तुम्हारी तुम मदीने का टिकट
मुझ को दिवाना मदीने का बना दाता पिया दौलते दुन्या का साइल बन के मैं आया नहीं
सोज़ दो ऐसा पए अह़मद रज़ा दाता पिया काश मैं रोया करूं इश्क़े रसूले पाक में
फ़ैज़ का दरया बहा दो सरवरा दाता पिया काश ! फिर लाहोर में नेकी की दा'वत आ़म हो
मैं तो हूं मंगता तेरे दरबार का दाता पिया मुझ को दाता ताजदाराने जहां से क्या ग़रज़
हो मेरी उम्मीद का गुलशन हरा दाता पिया झोलियां भर भर के ले जाते हैं मंगते रात दिन

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुराई को भलाई से टालने वाले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ में अपने साथ ना रवा व ना पसन्दीदा सुलूक पर सब्र करने वाले वोह बुज़ुर्ग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा वली, ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

थे। यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब और बरगुज़ीदा बन्दों का येह मा'मूल होता है कि वोह आने वाली हर मुसीबत पर सब्रो शुक्र से काम लेते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस त़रह़ अपने बन्दों पर बे शुमार ने'मतें निछावर फ़रमा कर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाता है, इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात उन्हें मसाइबो आलाम के इम्तिह़ान में डाल कर कामयाबी की सूरत में बुलन्दिये दरजात के इ़लावा बे शुमार दुन्यवी व उख़रवी इन्आ़मात के साथ साथ ऐसों को येह मुज़्दए जां फ़िज़ा भी सुनाता है कि اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ﴿۱۵۳﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है। (پ۲، البقرۃ:۱۵۳) याद रखिये ! ज़ाते बारी तआ़ला عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब वोह अ़ज़ीम ने'मत है कि जिस के ह़ुसूल के लिये अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने ऐसी ऐसी तकालीफ़ पर सब्र किया कि जिन के तसव्वुर से ही लर्ज़ा त़ारी हो जाता है। हमें भी येह निय्यत करनी चाहिये कि अगर कोई मुसीबत आई, किसी ने हमारा दिल दुखाया या बद सुलूकी से पेश आया तो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए सब्र से काम लेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : जब मैं अपने किसी बन्दे के बदन या उस के माल या उस की अवलाद की त़रफ़ कोई सख़्ती भेजूं, फिर वोह सब्रे जमील के साथ उस का इस्तिक़्बाल करे, तो क़ियामत के दिन मुझे उस से ह़या आएगी, कि मैं उस के लिये मीज़ान क़ाइम करूं या उस का नामए आ'माल खोलूं।

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم اول، ۲/۱۱۵، حدیث: ۶۵۵۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने ! दुन्या में ब ज़ाहिर कड़वे मह़सूस होने वाले सब्र के चन्द घूंट आख़िरत में कैसी मिठास का सबब बनेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने साथ पेश आने वाली बद सुलूकी पर कमाले सब्र का मुज़ाहरा किया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को वोह अ़ज़ीम मक़ामे विलायत अ़त़ा फ़रमाया कि

www.dawateislami.net

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को इस दुन्या से पर्दा किये हज़ार साल से ज़ाइद का अ़र्सा बीत चुका है, मगर आज भी लाखों मुसलमानों के दिलों में आप की मह़ब्बतो अ़ज़मत क़ाइमो दाइम है, लोग जूक़ दर जूक़ आप के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी की सआ़दत पाते हैं और अपनी ख़ाली झोलियां मुरादों से भरते हैं।

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का तआ़रुफ़

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का नाम : ''अ़ली'' वालिद का नाम ''उ़स्मान'' है। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का सिलसिलए नसब छे वासित़ों से सय्यिदुश्शुहदा, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से जा मिलता है। (बुज़ुर्गाने लाहोर, स. 222) आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की कुन्यत ''अबुल ह़सन'' है। (उर्दू दाइरतुल मआ़रिफ़, 9/91) जब कि मश्हूरो मा'रूफ़ लक़ब ''गंज बख़्श'' है। इस लक़ब की वज्हे तस्मिया (या'नी नाम रखने की वज्ह) कुछ यूं है कि ह़ज़रते ख़्वाजए ख़्वाजगान, सय्यिदुना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी सन्जरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जो कुछ अ़र्से तक आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर मो'तकिफ़ रहे और ह़ज़रते दाता गंज बख़्श رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के फ़ुयूज़े बात़िनी से माला माल हो कर जब अल वदाई फ़ातिह़ा के लिये ह़ाज़िर हुवे तो ज़बाने मुबारक पर बे साख़्ता येह शे'र आ गया :

गंज बख़्शो फ़ैज़े आ़लम, मज़्हरे नूरे ख़ुदा
नाक़िसां रा पीरे कामिल, कामिलां रा रहनुमा

ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़बाने मुबारक से निकला हुवा लक़ब ''गंज बख़्श'' आज पूरे बर्रे सग़ीर में गूंज रहा है। यहां तक कि बा'ज़ लोग तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के इस्मे मुबारक से भी ना वाक़िफ़ होते हैं और मह्ज़ ''दाता गंज बख़्श'' के लक़ब से ही याद करते हैं। (मह़फ़िले औलिया, स. 388, मुलख़्ख़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर दाता गंज बख़्श رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादते बा सआ़दत कमो बेश सिने 400 हिजरी में ग़ज़नी शहर में हुई। कुछ

www.dawateislami.net

अ़र्से बा'द आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का ख़ानदान मह़ल्ला हजवेर मुन्तक़िल हो गया, इसी निस्बत से आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ हजवेरी कहलाते हैं।

(उर्दू दाइरए मआ़रिफ़, जि. 9, स. 91 मुलख़्ख़सन)

ग़म मुझे मीठे मदीने का अ़ता कर दो शहा मेरा सीना भी मदीना दो बना दाता पिया

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

राहे ख़ुदा में सफ़र

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपने ज़माने के कई अ़ज़ीमुल मर्तबत (या'नी बुलन्द रुत्बे वाले) अइम्मए त़रीक़त व शरीअ़त से इ़ल्मो मा'रिफ़त के जाम पिये, उ़म्र का एक बड़ा ह़िस्सा सफ़र में गुज़ारा, जिस का मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से मिलना, उन के फ़ैज़ान से फ़ैज़याब होना, अपने नफ़्स को मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों का आ़दी बना कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी पाना है। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने किरमान, सीस्तान, तुर्किस्तान, मावरा अन्नह्र, ख़ूज़िस्तान, त़बरिस्तान, आज़र बेजान, फ़ार्स, इ़राक़, शाम, फ़लस्त़ीन और ह़िजाज़े मुक़द्दस समेत कई मुल्कों का सफ़र किया। (उर्दू दाइरतुल मआ़रिफ़, 9/94) आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जवां उ़म्री ही में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील कर चुके थे, आप के इ़ल्मी मक़ाम का अन्दाज़ा इस वाक़िए़ से लगाया जा सकता है कि एक मरतबा सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी की मौजूदगी में ह़ज़रते दाता अ़ली हजवेरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का एक ग़ैर मुस्लिम फ़लसफ़ी से मुकालमा हुवा तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपनी इ़ल्मी क़ाबिलिय्यत से ज़बरदस्त जवाबात के ज़रीए़ उसे ख़ामोश कर दिया, ह़ालांकि उस वक़्त आप की उ़म्र ज़ियादा न थी, क्यूंकि इस मुकालमे को सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी की ज़िन्दगी के आख़िरी साल में भी फ़र्ज़ किया जाए तो उस वक़्त आप की उ़म्र मुबारक तक़रीबन 20 साल बनती है।

(पेशे लफ़्ज़, अज़ कशफ़ुल मह़जूब, स. 12)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे मुस्त़फ़ा की बारगाहे पाक में कीजिये मेरी सिफ़ारिश आप या दाता पिया

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इल्मे दीन के हुसूल का शौक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि दाता गंज बख़्श رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ को इल्मे दीन ह़ासिल करने का किस क़दर शौक़ था ? इल्मे दीन के हुसूल की ख़ातिर आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने इराक़, शाम, और हिजाज़े मुक़द्दस समेत दस से ज़ाइद ममालिक का सफ़र किया और इस राहे पुर ख़ार में कई ना ख़ुशगवार वाक़िआत से भी हम किनार हुवे, मगर सब्रो रिज़ा के पैकर और रब तआ़ला के शुक्र गुज़ार रहे । अब ज़रा ग़ौर कीजिये कि एक त़रफ़ तो हमारे अस्लाफ़ का येह ह़ाल था कि हुसूले इल्मे दीन के ज़राएअ़ इन्तिहाई दुश्वार होने के बा वुजूद येह मुबारक हस्तियां तन देही (या'नी मह़नत व लगन) से इल्मे दीन ह़ासिल करते रहे और लोगों में नेकी की दा'वत आ़म करते रहे, इस के बर अ़क्स हमारा मुआ़मला येह है कि आज इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में जब कि इल्मे दीन ह़ासिल करना इन्तिहाई आसान हो चुका है, तमाम तर सहूलतों और आसाइशों के बा वुजूद भी हम इल्मे दीन से दूर हैं ह़त्ता कि फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की भी फ़ुरसत नहीं । हम ख़ुद को और अपनी अवलाद को दुन्यवी फ़वाइद दिलवाने के लिये उ़लूमो फ़ुनून तो सिखाते हैं ताकि आ'ला डिग्री ह़ासिल कर के हमारा नाम रोशन होने के साथ साथ अवलाद का आ़रिज़ी मुस्तक़बिल भी रोशन हो, मगर अफ़्सोस ! हमें अपनी आख़िरत संवारने की बिल्कुल फ़िक्र नहीं । याद रखिये ! इल्मे दीन सीखना हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है ।

कितना इल्म सीखना फ़र्ज़ है ?

ह़दीसे पाक में है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इल्म का त़लब करना हर मुसलमान मर्द (इसी त़रह़ औ़रत) पर (भी) फ़र्ज़ है ।

(ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلماء والحث الخ، ۱/۱۴۶، حدیث ۲۲۴)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक के तह़त मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत,

इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने जो कुछ फ़रमाया, उस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन ख़ुलासा अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं। सब में अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ येह है कि बुन्यादी अ़क़ाइद का इ़ल्म ह़ासिल करे, जिस से आदमी सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व मुख़ालफ़त से काफ़िर या गुमराह हो जाता है। इस के बा'द मसाइले नमाज़ या'नी इस के फ़राइज़ो शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें) सीखे ताकि नमाज़ सह़ीह़ त़ौर पर अदा कर सके। फिर जब रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी हो तो रोज़ों के मसाइल, मालिके निसाबे नामी (या'नी ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन बढ़ने वाले माल के निसाब का मालिक) हो जाए तो ज़कात के मसाइल, साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो मसाइले ह़ज, निकाह़ करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल, ताजिर हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, मुज़ारेअ़ या'नी काश्तकार (और ज़मीनदार) पर खेती बाड़ी के मसाइल, मुलाज़िम बनने और मुलाज़िम रखने वाले पर इजारे के मसाइल। وَعَلٰی ھٰذَاالْقِیاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुवे) हर मुसलमान आ़क़िलो बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है। इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लालो ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है। नीज़ मसाइले क़ल्ब (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या (बात़िनी फ़राइज़) मसलन आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरहा और इन का इ़लाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 342)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि दीन का बुन्यादी इ़ल्म न सीखना, आख़िरत की तबाही व बरबादी का सबब बन सकता है क्यूंकि जब नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, निकाह़, तिजारत, मज़दूरी और दीगर मुआ़मलात के बारे में दीनी मा'लूमात न होंगी तो यक़ीनन इन कामों में शरई ग़लत़ियां भी सरज़द हो जाएंगी जिन की वज्ह से आख़िरत में पकड़ हो सकती है। लिहाज़ा

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी की इन अनमोल साअ़तों को ग़नीमत जानते हुवे हुसूले इ़ल्मे दीन के लिये कोशां रहिये और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से बचने और आख़िरत के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

गो ज़लीलो ख़्वार हूं पापी हूं मैं बदकार हूं *आप का हूं आप का हूं आप का दाता पिया*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में तशरीफ़ आवरी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना येह वोह अ़ज़ीम काम है कि जिस की तक्मील के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वक़्तन फ़ वक़्तन अपने अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस दुन्या में मबऊ़स फ़रमाया। यहां तक कि ताजदारे काइनात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इसी मक़्सद के लिये इस दुन्या में तशरीफ़ लाए। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द उम्मत को नेकी की दा'वत देने और इन की तर्बिय्यत का येही काम बारगाहे नुबुव्वत के बराहे रास्त तर्बिय्यत याफ़्ता सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने संभाल लिया। सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द भी हर दौर में बुज़ुर्गाने दीन ने इस्लामी ता'लीमात के नूर से लोगों के दिलों को मुनव्वर किया। ह़ज़रते सय्यिदुना दाता अ़ली हजवेरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने भी इसी मक़्सद को अपना शिआ़र बनाया और नेकी की दा'वत के इस अहम फ़रीज़े को निभाने के लिये मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) पहुंचे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने (मर्कज़ुल औलिया) लाहोर में इ़ल्मो ह़िक्मत के ऐसे दरया बहाए कि वोह शहर जो पहले कुफ़्र और शिर्क के अन्धेरों में डूबा हुवा था, हुज़ूर सय्यिदुना दाता अ़ली हजवेरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की कोशिशों से क़ल्अ़ए इस्लाम बन गया, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने किरदार और नर्म गुफ़्तार से कई दिलों में आप की मह़ब्बत रासिख़ हो गई। मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के क़ियाम की मुद्दत तक़रीबन तीस साल है। (**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 468) इस तमाम अ़र्से में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه शबो रोज़ दीन की तब्लीग़ में मश्ग़ूल रहे,

www.dawateislami.net

आप की बे दाग़ सीरत, दिल कश गुफ़्तगू, पुर नूर शख़्सिय्यत और दिलों में उतर जाने वाले इरशादाते आ़लिया लोगों को कुफ़्र व ज़लालत (या'नी गुमराही) के दल दल से निकाल कर हिदायत की राह पर गामज़न करते रहे। मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपनी क़ियाम गाह के पास ही एक जगह मस्जिद की ता'मीर का संगे बुन्याद रखा और इस मस्जिद की ता'मीर के वक़्त आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ख़ुद मज़दूरों की त़रह़ काम किया और बड़ी मह़ब्बत और जज़्बे से इस की ता'मीर में पेश पेश रहे, मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) शहर में येही पहली मस्जिद थी जो एक वलिय्युल्लाह के हाथों ता'मीर हुई। (अल्लाह के ख़ास बन्दे, स. 469) ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने पूरी ज़िन्दगी ख़ूब मह़ब्बत व लगन से ख़िदमते दीन का काम सर अन्जाम दिया, दुखी इन्सानिय्यत को अम्नो सुकून का पैग़ाम दिया और अपने मुरीदीन व मुह़िब्बीन की दीनी व दुन्यावी ह़ाजतों को पूरा फ़रमाया। आज भी आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार से अपने अ़क़ीदत मन्दों की ह़ाजत रवाई फ़रमाते, इन की परेशानियां ह़ल फ़रमाते और अपने रूह़ानी फ़ैज़ान से जिसे चाहते हैं माला माल करते हैं।

मैं हूं इ़स्यां का मरीज़ और तुम त़बीबे आ़सियां हो अ़त़ा मुझ को गुनाहों की दवा दाता पिया

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दाता साह़िब और ह़ाज़िरिये मज़ारात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! औलिया उल्लाह के मज़ारात पर ह़ाज़िरी की बरकत से दुआ़एं क़बूल होती हैं, मुश्किलात व मसाइब से नजात मिलती है, ख़ास इस नज़रिये से औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के मज़ारात पर जाना भी हमारे अस्लाफ़ का त़रीक़ा रहा है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का भी येह मा'मूल था कि वोह बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के मज़ारात पर ह़ाज़िरी देते थे, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के मुतअ़ल्लिक़ अपने कई वाक़िआ़त उन्हों ने अपनी मश्हूरो मा'रूफ़ किताब "कश्फ़ुल मह़जूब" में दर्ज किये हैं।

आइये इन में से चन्द सुनते हैं : चुनान्चे,

www.dawateislami.net

1. ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''मैं एक रोज़ सफ़र करता हुवा, मुल्के शाम में मुअज़्ज़िने रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवा, वहां मेरी आंख लग गई और मैं ने अपने आप को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा (زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا) में पाया । क्या देखता हूं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़बीलए बनी शैबा के दरवाज़े पर मौजूद हैं और एक उ़म्र रसीदा शख़्स को किसी छोटे बच्चे की त़रह़ उठाए हुवे हैं, मैं फ़र्ते महब्बत से बे क़रार हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ दौड़ा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दमों को बोसा दिया, दिल ही दिल में इस बात पर बड़ा ह़ैरान भी था कि येह ज़ईफ़ शख़्स कौन है ? इतने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुव्वते बात़िनी और इ़ल्मे ग़ैब के ज़रीए़ मेरी ह़ैरत व इस्ति'जाब (या'नी तअ़ज्जुब) की कैफ़िय्यत जान गए और मुझ से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : ''येह अबू ह़नीफ़ा हैं और तुम्हारे इमाम हैं ।

(कश्फ़ुल महजूब, स. 216 ज़ियाउल क़ुरआन मुलख़्ख़सन)

2 मज़ीद फ़रमाते हैं : एक बार मुझे एक (दीनी) मुश्किल दरपेश हुई, मैं ने उस के ह़ल की कोशिश की मगर कामयाब न हुवा, इस से क़ब्ल भी मुझ पर ऐसी ही मुश्किल आई थी, तो मैं ने ह़ज़रते शैख़ अबू यज़ीद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी दी थी और मेरी वोह मुश्किल आसान हो गई थी । इस मरतबा भी मैं ने इरादा किया कि वहां ह़ाज़िरी दूं । इसी निय्यत से तीन माह तक उन के मज़ारे मुबारक पर चिल्ला कशी की, ताकि मेरी मुश्किल ह़ल हो जाए (कश्फ़ुल महजूब, स. 65)

3 ह़ज़रते अबुल अ़ब्बास क़ासिम बिन महदी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के बारे में हुज़ूर दाता गंज बख़्श رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इरशाद फ़रमाते हैं कि आज तक इन का मज़ार ''मर्व'' (तुर्कमानिस्तान) में मौजूद है और बहुत मश्हूरो मा'रूफ़ है, लोग वहां मुरादें मांगने जाते हैं और बड़ी बड़ी मुश्किलात ह़ल करने

www.dawateislami.net

के लिये इन से त़ालिबे इम्दाद होते हैं और उन की इमदाद की जाती है, येह बात बहुत मुजर्रब (या'नी कई बार की आज़्माई हुई) है।

(कश्फ़ुल मह़्जूब, स. 165)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलियाए किराम ह़यात हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना दाता अ़ली हजवेरी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه का भी येह अ़क़ीदा था कि न सिर्फ़ मज़ारात पर जाना बाइसे बरकत है बल्कि वहां मुश्किलात भी ह़ल होती हैं और येह सब साह़िबे मज़ार ही का फ़ैज़ान होता है। मुमकिन है किसी को येह वस्वसा आए कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का फ़ैज़ कैसे मिल सकता है ? क्यूंकि वोह तो वफ़ात पा चुके होते हैं। याद रखिये ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से मज़ारात में न सिर्फ़ ह़यात होते हैं बल्कि ज़ाइरीन (अपने मज़ारात की ज़ियारत करने वालों) की हिदायत व मदद भी फ़रमाते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्माईल ह़क़्क़ी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : अम्बिया, औलिया और शुहदा के अजसाम क़ब्रों में भी न तो मुतग़य्यर होते हैं और न ही बोसीदा होते हैं, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के जिस्मों को उस ख़राबी से जो गोश्त के गलने सड़ने से पैदा होती है, मह़फ़ूज़ रखा है।

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि. 3, स. 439)

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर गए हैं और अपने परवर दगार के पास ज़िन्दा हैं उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है, वोह ख़ुश ह़ाल हैं और लोगों को इस का शुऊ़र नहीं। (اشعۃ اللمعات، کتاب الجہاد، باب حکم الاسراء، ۳/ ۴۲۳)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : औलियाउल्लाह की दोनों ह़ालतों (ज़िन्दगी व मौत) मैं अस्लन (कोई) फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर में तशरीफ़ ले जाते हैं। (مرقاۃ شرح مشکوۃ باب الجمعۃ فصل الثالث، ۳/ ۴۵۹) (अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 433)

www.dawateislami.net

कौन कहता है वली सब मर गए ?

क़ैद से छूटे वोह अपने घर गए !

ह़ाज़िरिये मज़ारात, बरक्त का सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन जलीलुल क़द्र अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की तसरीह़ात से येह मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शुहदाए उ़ज़्ज़ाम और औलियाए रब्बे सलाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی सब अपने अपने मज़ारात में ज़िन्दा होते हैं और तसर्रुफ़ भी फ़रमाते हैं। इसी लिये सिर्फ़ अ़वाम ही नहीं बल्कि बड़े बड़े उ़लमा और फ़ुज़ला का येह मा'मूल रहा है कि वोह अपनी मुश्किलात के ह़ल के लिये औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के मज़ारात पर ह़ाज़िरी दिया करते थे। आइये इस बारे में तीन अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی सुनते हैं : चुनान्चे,

1. मश्हूर ह़म्बली मुह़द्दिस ह़ज़रते इमाम ख़ल्लाल अबू बक्र अह़मद बिन मुह़म्मद बग़्दादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई मुआ़मला दर पेश होता है, मैं इमाम मूसा काज़िम बिन जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर आप का वसीला पेश करता हूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मुश्किल को आसान कर के मुझे मेरी मुराद अ़त़ा फ़रमा देता है।

(تاریخ بغداد، ج ۱ ص ۱۳۳)

2. करोड़ों शाफ़ेइय्यों के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है तो मैं दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर के इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर दुआ़ मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ाजत पूरी कर देता है। (अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 94)
3. ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन सुलैमान رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मुझे एक ह़ाजत थी और मैं काफ़ी तंगदस्त भी था। मैं ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िरी दी, तीन बार सूरए इख़्लास की तिलावत की और इस का सवाब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ और तमाम

www.dawateislami.net

मुसलमानों की अरवाह़ को पहुंचाया, फिर अपनी ह़ाजत बयान की । जूंही मैं वहां से वापस आया मेरी ह़ाजत पूरी हो चुकी थी ।

(الروض الفائق ص۱۸۸)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईसाले सवाब की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िआ़त से मा'लूम हुवा कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के मज़ारात पर दुआ़एं क़बूल होती हैं, नीज़ बुज़ुर्गाने दीन और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को ईसाले सवाब करने की अहम्मिय्यत भी मा'लूम हुई, लिहाज़ा हमारा भी येह मा'मूल होना चाहिये ! कि जब भी किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल हो तो साह़िबे मज़ार को ज़रूर ईसाले सवाब भी करें । हमें इस की बड़ी बरकतें मिलेंगी । اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ नक़्ल फ़रमाते हैं : कि एक बुज़ुर्ग का बयान है : मैं ह़ज़रते राबिआ़ बसरिय्या رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہَا के ह़क़ में दुआ़ किया करता था, एक दफ़्आ़ मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा, फ़रमा रही थीं : "तुम्हारे तह़ाइफ़ (या'नी दुआ़एं और ईसाले सवाब) नूर के त़बाक़ों में हमारे पास आते हैं जो नूर के रूमालों से ढांपे होते हैं ।" (الرسالۃ القشیریۃ، باب رؤیا القوم، ص۴۲۴)

मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से बरकतें ह़ासिल करने के लिये इन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी के भी कुछ आदाब होते हैं । ह़ाज़िरी से पहले क्या क्या अच्छी निय्यतें होनी चाहियें ? मज़ारात पर जा कर क्या दुआ़एं मांगनी चाहियें ? मज़ारात पर ह़ाज़िरी के क्या क्या फ़वाइद हैं ? वग़ैरा वग़ैरा येह सब जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 48 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "मज़ाराते

www.dawateislami.net

औलिया की हिकायात'' हदिय्यतन हासिल फ़रमा कर इस का मुतालआ कर लीजिये, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात में काफ़ी इज़ाफ़ा होगा। आइये इसी रिसाले से मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा और इस के मदनी फूल सुनते हैं :

(अगर कोई शख़्स वलिय्युल्लाह के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसलमान की क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तहब येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैर मकरूह वक़्त में) दो रक्अत नफ़्ल पढ़े, हर रक्अत में सूरतुल फ़ातिहा के बा'द एक बार आयतुल कुरसी और तीन बार सूरतुल इख़्लास पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साहिबे क़ब्र को पहुंचाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस फ़ौत शुदा बन्दे की क़ब्र में नूर पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अता फ़रमाएगा। (فتاوی عالمگیری ج۵ص۳۵۰) फिर अच्छी अच्छी निय्यतें करने के बा'द मज़ारात की तरफ़ रवाना हो और (ज़ाइर या'नी ज़ियारत करने वाले को चाहिये कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के) मज़ाराते तय्यिबात पर हाज़िर होने में पाइन्ती (پا-ئِن-تی या'नी क़दमों) की तरफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर मुवाजहे में (या'नी चेहरे के सामने) खड़ा हो और मुतवस्सित (या'नी दरमियानी) आवाज़ में (इस तरह) सलाम अर्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدِیْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर 'दुरूदे ग़ौसिय्या' तीन बार, اَلْحَمْد शरीफ़ एक बार, आयतुल कुरसी एक बार, सूरतुल इख़्लास सात बार, फिर ''दुरूदे ग़ौसिय्या'' सात बार और वक़्त फ़ुरसत दे तो सूरए یٰسٓ और सूरए मुल्क भी पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करे कि इलाही ! इस क़िराअत पर मुझे इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है, न उतना जो मेरे अमल के क़ाबिल है और इसे मेरी तरफ़ से इस बन्दए मक़्बूल को नज़्र पहुंचा। फिर अपना जो मतलब, जाइज़ (और) शरई हो, उस के लिये दुआ करे और साहिबे मज़ार की रूह को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर उसी तरह सलाम कर के वापस आए।

(फ़तावा रज़विय्या : 9/522, अज़ मज़ाराते औलिया की हिकायात, स, 6/16)

www.dawateislami.net

नियाज़ तक़्सीम करने की एहतियातें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन देखा जाता है कि मज़ाराते औलिया पर नियाज़ भी तक़्सीम की जाती है, येह भी साह़िबे मज़ार को ईसाले सवाब करने का एक त़रीक़ा है, यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये नियाज़ वग़ैरा तक़्सीम करने की बड़ी फ़ज़ीलत है, चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 521 पर लिखते हैं : खाना खिलाना–लंगर बांटना भी मन्दूब (या'नी अच्छा अ़मल) व बाइसे अज्र है, ह़दीस में है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

اِنَّ اللّٰہَ عَزَّوَجَلَّ یُبَاھِیْ مَلٰئِکَتَہٗ بِالَّذِیْنَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ مِنْ عَبِیْدِہٖ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने उन बन्दों के साथ जो लोगों को खाना खिलाते हैं फ़िरिश्तों पर मुबाहात (या'नी फ़ख़्र) फ़रमाता है।

(फ़तावा रज़विय्या जि. 24, स. 521, از الترغیب والترھیب، ج۲، ص۳۸، الحدیث۲۱)

लेकिन लंगर (या'नी नियाज़) तक़्सीम करते हुवे इस बात का ख़याल ज़रूर रखिये कि किसी भी त़रह़ लंगर (नियाज़) की बे हुरमती व बे अदबी न हो, न पाउं में आए, न मज़ार शरीफ़ का फ़र्श आलूदा हो, धक्कम पील से बचने के लिये इस्लामी भाइयों को बिठा कर या क़ित़ार बना कर लंगर (नियाज़) तक़्सीम किया जाए, आने वाले ज़ाइरीन के हुक़ूक़ का ख़याल रखा जाए कि लंगर (नियाज़) तक़्सीम करने की वज्ह से उन्हें ह़ाज़िरी देने में किसी क़िस्म की तक्लीफ़ का सामना न करना पड़े और ख़ास त़ौर पर मज़ार शरीफ़ की ता'ज़ीम का मुकम्मल एहतिमाम किया जाए, ऐसा न हो कि एक त़रफ़ तो लंगर (नियाज़) तक़्सीम कर के अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ बनें और दूसरी त़रफ़ मज़ार शरीफ़ की बे अदबी के मुर्तकिब हो जाएं। खाने की नियाज़ के साथ साथ मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल तक़्सीम कर के भी बे शुमार **सवाबे जारिया** साह़िबे मज़ार की ख़िदमत में पेश किया जा सकता है।

(मज़ाराते औलिया की ह़िकायात, स. 17)

www.dawateislami.net

खाना गिर जाए तो ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! न सिर्फ़ मज़ार शरीफ़ में लंगर (नियाज़) तक़्सीम करते हुवे बल्कि हर जगह खाना खाते और खिलाते हुवे एह़तियात़ करनी चाहिये कि कहीं खाने के दाने वग़ैरा ज़ाएअ़ न हो जाएं। अगर कहीं कोई लुक़्मा गिर जाए और तन्फ़ीरे अ़वाम (या'नी लोगों की नफ़रत) का अन्देशा भी न हो तो लोगों की परवा किये बिग़ैर बिला झिजक उठा कर खा लीजिये, اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें नसीब होंगी।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मकाने आ़ली शान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुवा देखा तो उस को ले कर पोंछा फिर खा लिया और फ़रमाया : आ़इशा ! (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) अच्छी चीज़ का एह़तिराम करो कि येह चीज़ (या'नी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई। (ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب النھی عن القاء الطعام، ۴/۵۰، حدیث:۳۳۵۳)

खाना ज़ाएअ़ मत कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल हर एक बे बरकती और तंगदस्ती का रोना रो रहा है। क्या बई़द कि रोटी का एह़तिराम न करने की येह सज़ा हो। आज शायद ही कोई मुसलमान ऐसा हो, जो रोटी ज़ाएअ़ न करता हो। हर त़रफ़ खाने की बे हुरमती के दिल सोज़ नज़्ज़ारे हैं, शादी की तक़रीबात हों या बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی की नियाज़ के तबर्रुकात। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! दस्तरख़्वानों और दरियों पर बे दर्दी के साथ खाना गिराया जाता है, खाने के दौरान हड्डियों के साथ बोटी और मसालह़ा बराबर साफ़ नहीं किया जाता, गर्म मसालह़े के साथ भी खाने के कसीर अजज़ा ज़ाएअ़ कर दिये जाते हैं, थालों में बचा हुवा थोड़ा सा खाना और प्यालों, पतीलों में बचा हुवा शोरबा दोबारा इस्ति'माल करने का अक्सर लोगों का ज़ेह्न नहीं, इस त़रह़ का बहुत सारा बचा हुवा खाना उ़मूमन कचरा कूंडी की नज़्र कर दिया जाता है।

अब तक जितना भी इसराफ़ किया है, बराए मेहरबानी ! उस से तौबा कर लीजिये । आयिन्दा खाने के एक भी दाने और शोरबे के एक भी क़त़रे का इसराफ़ न हो इस का अ़हद कर लीजिये । وَاللہِ الْعَظِیْم! क़ियामत में ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब होना है, यक़ीनन कोई भी क़ियामत के ह़िसाब की ताब नहीं रखता, सच्ची तौबा कर लीजिये । दुरूदे पाक पढ़ कर अ़र्ज़ कीजिये । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज तक मैं ने जितना भी इसराफ़ किया, उस से और तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से तौबा करता हूं और तेरी अ़त़ा कर्दा तौफ़ीक़ से आयिन्दा गुनाहों से बचने की भरपूर कोशिश करूंगा, या रब्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी तौबा क़बूल फ़रमा और मुझे बे ह़िसाब बख़्श दे । (फ़ैज़ाने सुन्नत स. 254)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का खुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना दाता अ़ली हजवेरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरतो किरदार के मुतअ़ल्लिक़ बयान सुना । आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पांचवीं सदी हिजरी के वोह अ़ज़ीमुश्शान बुज़ुर्ग हैं कि जिन के विसाल को हज़ार साल से ज़ियादा अ़र्सा गुज़र चुका है, मगर आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इ़ल्मी व रूह़ानी चमक दमक में आज भी कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं हुई । लाखों मुसलमानों में आप का फ़ैज़ान जारी व सारी है । आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का अस्ल वत़न अफ़्ग़ानिस्तान का शहर ग़ज़नी है, लेकिन लोगों को नेकी की दा'वत देने के लिये आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपना वत़न छोड़ कर एक अन्जान शहर में इक़ामत इख़्तियार फ़रमाई, इस से हमें भी येह दर्स मिलता है कि नेकी की दा'वत देने के लिये हर माह कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र करना चाहिये और इस राह में आने वाली मुश्किलात को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करते हुवे ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की ख़िदमत के लिये कोशां रहना चाहिये । हर शो'बे से मुन्सलिक अफ़राद पर अह़सन अन्दाज़ में इनफ़िरादी कोशिश करनी चाहिये ।

मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी जहां मुख़्तलिफ़ शो'बाजात में ख़िदमते दीन का काम सर अन्जाम दे रही है, वहीं खिलाड़ियों की इस्लाह़ व तर्बिय्यत के लिये भी एक शो'बा बनाम ''मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान'' क़ाइम किया है, जिस का बुन्यादी मक़्सद खेलों से मुन्सलिक लोगों में दा'वते इस्लामी के पैग़ाम को आ़म करना और उन्हें दा'वते इस्लामी से वाबस्ता करते हुवे इस मदनी मक़्सद ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेह्न देना है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कई खिलाड़ियों और इन के घर वालों को मदनी मक़्सद ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है'' का ज़ेह्न देने की कोशिश जारी है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम 'हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत'

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों की ख़िदमत के लिये दा'वते इस्लामी के तह़त जैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। जैली ह़ल्क़े के 12 मदनी काम मुसलमानों को राहे सुन्नत पर चलाने और आ़शिक़ाने रसूल में क़ुरआनो सुन्नत का पैग़ाम पहुंचाने में बहुत मुआ़विन हैं। इन 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम ''हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करना'' भी है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का आग़ाज़ बा'द नमाज़े मग़रिब सूरए मुल्क की तिलावत से होता है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! किताबुल्लाह की एक आयत सुनना पहाड़ (जबले सबीर) की मिस्ल सदक़ा करने के अज्र से ज़ियादा अ़ज़ीम है। (جمع الجوامع، حرف الواو، ۸/ ۸۲، حدیث: ۲۴۲۱۵) ग़ौर कीजिये ! जब एक आयत सुनने के येह फ़वाइद हैं तो मुकम्मल सूरत का

www.dawateislami.net

सुनना किस क़दर अज्रो सवाब का बाइ़स होगा । तिलावत के बा'द ना'त शरीफ़ पढ़ी जाती है । ना'त पढ़ने और सुनने के भी क्या कहने ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'त पढ़ना, ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुन्नत और ना'त सुनना सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते करीमा है, इस के बा'द सुन्नतों भरे बयान की तरकीब होती है, जिस में इ़ल्मे दीन के बेश क़ीमत मोती चुनने को मिलते हैं । इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत के बारे में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा येह है कि मुसलमान इ़ल्म सीखे, फिर अपने इस्लामी भाई को सिखाए ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب ثواب معلم الناس بالخیر، رقم ۲۴۳، ج۱، ص۱۵۸)

ज़िक्रो दुआ़, सलातो सलाम के बा'द ह़ल्क़े लगते हैं, जिस में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर सुन्नतें व आदाब बताए जाते हैं, कोई एक दुआ़ याद करवाई जाती है । फ़िक्रे मदीना का मदनी ह़ल्क़ा होता है, फिर वक़्फ़ए आराम । खुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल रात ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करने के बा'द नमाज़े तहज्जुद की बरकात लूटते हैं, अज़ाने फ़ज्र के बा'द सदाए मदीना, नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त, नमाज़ के बा'द मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत और फिर मदनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुवे इश्राक़ो चाश्त की सआ़दत पाने के बा'द सलातो सलाम पर इजतिमाअ़ का इख़्तिताम हो जाता है । इजतिमाअ़ के इख़्तिताम पर कई आ़शिक़ाने रसूल सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करते हैं ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत हमारे लिये किस क़दर बाइ़से अज्रो सवाब है । लिहाज़ा आप से मदनी इल्तिजा है, सुस्ती उड़ाइये और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को अपना मा'मूल बनाइये ! और ढेरों सवाब के ह़क़दार बन जाइये । हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की बरकत का अन्दाज़ा इस मदनी बहार से लगाइये !

मदनी बहार

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के अ़लाक़े मुल्तान रोड़ के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ की तह़रीर भेजी कि मैं ला उबाली (या'नी बे फ़िक्र)

www.dawateislami.net

और शोख़ त़बीअ़त का मालिक था । टिफ़न बजा कर बच्चों वाले गीत गाने और क़व्वालों की नक़्लें उतारने के मुआ़मले में ख़ानदान भर में मश्हूर था । शादी व दीगर तक़रीबात में मिज़ाहिय्या चुटकुले और फ़िल्मी ग़ज़लें सुनाना, गाने गाना, बे ढंगे अन्दाज़ में नाच दिखाना और त़रह़ त़रह़ के नख़रों से लोगों को हंसाना, मेरा मह़बूब मश्ग़ला था, स्कूल का ज़माना था, एक बा इमामा इस्लामी भाई अक्सर बड़े भाई जान से मिलने आया करते थे । एक दिन भाई जान ने मेरा तआ़रुफ़ करवाया तो उन्हों ने मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश की । मैं उन की दा'वत पर जुमा'रात को सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जा पहुंचा, मुझे बहुत अच्छा लगा । यूं मैं ने पाबन्दी से जाना शुरूअ़ कर दिया और दीगर क्लास फ़ेलोज़ को भी दा'वत पेश की जिस पर वोह भी आने लगे । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी । आहिस्ता आहिस्ता इमामा शरीफ़ भी सज गया, जिस पर घर के बा'ज़ अफ़राद ने सख़्ती के साथ मुख़ालफ़त की, ह़त्ता कि बसा अवक़ात مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इमामा शरीफ़ खींच कर उतार दिया जाता । दर्स देने से रोका जाता, ज़ुल्फ़ें रखीं तो घर वालों ने ज़बरदस्ती कटवा दीं, दाढ़ी अभी निकली नहीं थी, मगर सजाने की निय्यत कर ली थी । मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसीटें सुनने से ढारस बंधी और ह़ौसला मिलता चला गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता घर में भी मदनी माह़ोल बन गया । वोह घर वाले जो सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की इजाज़त नहीं देते थे, उन्हों ने मुझे यक्मुश्त बारह माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की इजाज़त दे दी । घर में इस्लामी बहनों का इजतिमाअ़ शुरूअ़ हो गया और वालिद साह़िब ने भी दाढ़ी सजा ली । (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 407)

गर्चे फ़नकार हो, क़ाफ़िले में चलो गो गुलूकार हो, क़ाफ़िले में चलो
ख़ुल्द दरकार हो, क़ाफ़िले में चलो फ़ज़्ले ग़फ़्फ़ार हो, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा कीजिये :

۞ सुरीन ज़मीन पर रखें और दोनों घुटनों को खड़ा कर के दोनों हाथों से घेर लें और एक हाथ से दूसरे को पकड़ लें, इस त़रह़ बैठना सुन्नत है (लेकिन इस दौरान घुटनों पर कोई चादर वग़ैरा ओढ़ लेना बेहतर है।) (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 378) ۞ चार ज़ानू (या'नी पालती मार कर) बैठना भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित है। ۞ जहां कुछ धूप और कुछ छाऊं हो वहां न बैठें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाऊं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए। (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل و الشمس، الحدیث ۴۸۲۱، ج ۴، ص ۳۳۸) ۞ क़िब्ला रुख़ हो कर बैठें। (रसाइले अ़त्तारिय्या, ह़िस्सा : 2, स. 229) ۞ आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त पर उन की ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजूदगी) में भी न बैठे। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 369 / 424) ۞ जब कभी इजतिमाअ़ या मजलिस में आएं तो लोगों को फलांग कर आगे न जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं। ۞ जब बैठें तो जूते उतार लें आप के क़दम आराम पाएंगे। (الجامع الصغیر، الحدیث ۵۵۴، ص ۴۰) ۞ मजलिस से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ तीन बार पढ़ लें तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है :

سُبْحَانَكَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَیْكَ

तर्जमा : *तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** ! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं ।*

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، الحدیث ۴۸۵۷، ج۴، ص۳۴۷)

۞ जब कोई आ़लिमे बा अ़मल या मुत्तक़ी शख़्स या सय्यिद साहि़ब या वालिदैन आएं तो ता'ज़ीमन खड़े हो जाना सवाब है ।

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : बुज़ुर्गों की आमद पर येह दोनों काम या'नी ता'ज़ीमी क़ियाम और इस्तिक़्बाल जाइज़ बल्कि सुन्नते सह़ाबा है । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 370)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त हि़स्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''सुन्नतें और आदाब'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

तीन दिन हर माह जो अपनाए मदनी क़ाफ़िला
बे ह़िसाब उस का ख़ुदाया ख़ुल्द में हो दाख़िला

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

🕮 बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'रूज़ात 🕮

(1) बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार ज़रूर ज़रूर और ज़रूर पढ़ लें

(2) जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें

(3) हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इबारात हरगिज़ न पढ़ा करें

(4) बयान के ह़ुसूल के लिये अपनी काबीना के कारकर्दगी ज़िम्मेदार से राबित़ा रखें

(5) अगर बराहे रास्त बयान न मिल सके तो वेब साइट से डाऊन लोड कर लें

✍ राबित़ा ✍

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक और 1 दुआ़

《1》 शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

《2》 तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।** (اَیضاً ص ٦٥)

《3》 रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

《4》 एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

www.dawateislami.net

《5》 छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

हज़रते अह़मद सावी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفۡضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

《6》 कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلۡقَوۡلُ الۡبَدِیۡع ص ۱۲۵)

《7》 दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث۳۱)

हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल क़ुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**

www.dawateislami.net